मुझ में बने रहो

शिष्य की पहचान –भाग 2

डॉ. डेविड प्लॉट

आइए हम अपनी–अपनी बाइबल में कुलुस्से की कलीसिया को लिखी पौलुस की पत्री खोल लें।

इस गहन एवं संवेदनशील अध्याय 1 के पद 24–29 को हम देखेंगे और विशेष करके पद 27 पर मनन करेंगे जिसमें सात प्रभावी शब्द हमारा ध्यान आकार्षित करते हैं, ये शब्द यदि हम अन्तर्ग्रहण कर लें तो हमारे जीवन में गंभीर परिवर्तन आ जाएगा। ये शब्द हमें मसीही जीवन, और मसीह के शिष्य होने का भेद समझाते हैं।

कुलुस्सियों 1:24–29 "अब मैं उन दुःखों के कारण आनन्द करता हूं, जो तुम्हारे लिये उठाता हूँ और मसीह के क्लेशों की घटी उसकी देह के लिये, अर्थात् कलीसिया के लिये, अपने शरीर में पूरी करता हूँ; जिसका मैं परमेश्वर के उस प्रबन्ध के अनुसार सेवक बना जो तुम्हारे लिये मुझे सौंपा गया, ताकि मैं परमेश्वर के वचन को पूरा पूरा प्रचार करूँ। अर्थात् उस भेद को जो समयों और पीढ़ियों से गुप्त रहा, परन्तु अब उसके उन पवित्र लोगों पर प्रगट हआ है। जिन पर परमेश्वर ने प्रगट करना चाहा कि उन्हें ज्ञात हो कि अन्यजातियों में उस भेद की महिमा का मूल्य क्या है, और वह यह है कि मसीह जो महिमा की आशा है तुम में रहता है। जिसका प्रचार करके हम हर एक मनुष्य को चेतावनी देते हैं और सारे ज्ञान से हर एक मनुष्य को सिखाते हैं, कि हम हर एक व्यक्ति को मसीह में सिद्ध करके उपस्थित करें इसी के लिये मैं उसकी उस शक्ति के अनुसार जो मुझ में सामर्थ्य के साथ प्रभाव डालती है, तन मन लगाकर परिश्रम भी करता हूँ।"

पद 27, "मसीह जो महिमा की आशा है तुम में रहता है।" मैं चाहता हूं कि ये सात शब्द– "मसीह, महिमा की आशा, तुम में रहता है।" मसीह जीवन का भेद आप पर प्रकट करें। मुझे पूरा विश्वास है कि यदि हम इस सच्चाई को ग्रहण कर लें तो मसीही जीवन को आंकने का हमारा दृष्टिकोण ही बदल जाएगा। इन शब्दों में मसीही विश्वास के आधारभूत सत्य विहित है। मेरे विचार में अधिकांश मसीही जनों को इसे मन में उतार लेने की आवश्यकता है। तो आइए हम एक–एक करके इन शब्दों का विश्लेषण करें।

मसीहः मसीही जीवन एक सामर्थी जीवन है जिसका मूल मसीह है। पौलुस ने कुलुस्से की कलीसिया को यह पत्र इसलिए लिखा था कि कलीसिया में झूठी शिक्षाएं प्रचलित थीं जिसके कारण उनके विश्वास की नींव हिल रही थी अर्थात मसीह की महानता पर आघात किया जा रहा था। संपूर्ण धर्मशास्त्र में मसीह के

चरित्र–चित्रण का यह सर्वोत्तम भाग है। पद 15 में मसीह का चित्रण देखिए, "वह तो अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप और सारी सृष्टि में पहिलौठा है।" वह देह में प्रकट परमेश्वर है। अब अध्याय 2 पद 9 देखिए: "उसमें ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता सदेह वास करती है। अध्याय 1:16, 17 में वह सृष्टि का रचियता है।

कुलुस्सियों 1:16, 17 "क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई, स्वर्ग की हों अथवा पृथ्वी की, देखी या अनदेखी, क्या सिंहासन, क्या प्रभुताएँ, क्या प्रधानताएँ, क्या अधिकार, सारी वस्तुएँ उसी के द्वारा और उसी के लिए सृजी गई हैं। वही सब वस्तुओं में प्रथम है, और सब वस्तुएँ उसी में स्थिर रहती हैं।"

वह सृष्टि का रचयिता ही नहीं सदा के लिए सृष्टि का पालनहार है। उसी के द्वारा सब कुछ अपनी–अपनी जगह पर है। अन्यथा सब नाश हो जाएगा। हम सांस ले रहे हैं क्योंकि वह हमारी सांसे चला रहा है। वह आदि से अन्त तक सृष्टि का रचयिता है। हम उसी के द्वारा रचे गए हैं। वह परमेश्वर का रूप है, वह सृष्टि का रचयिता है, वह कलीसिया का सिर है। पद 18– "वही देह, अथात् कलीसिया का सिर है; वही आदि है, और मरे हुओं से जी उठनेवालों में पहिलौठा कि सब बातों में वही प्रधान ठहरे।" हम इस विषय चर्चा कर चुके हैं कि हम मसीह की देह हैं और वह सिर है अर्थात वह प्रधान है। अतः वह परमेश्वर का रूप है, सृष्टि का रचयिता है, वह कलीसिया का सिर है, और संसार का मुक्तिदाता है। देखिए पद 19, 20 " क्योंकि पिता की प्रसन्नता इसी में है कि उसमें सारी परिपूर्णता वास करे, और उस के क्रूस पर बहे हुए लहू के द्वारा मेलमिलाप करके, सब वस्तुओं का उसी के द्वारा से अपने साथ मेल कर ले, चाहे वे पृथ्वी पर की हों चाहे स्वर्ग में की।"

मसीह ने संपूर्ण सृष्टि की रचना ही नहीं की क्रूस पर बहाए गए उसके लहू के द्वारा परमेश्वर से जगत को मेल भी करवाया। अब वही मसीह आपके पास है तो आपके जीवन का मूल परिवर्तन हो जाएगा।

कुलुस्सियों 1:27 की आकर्षक बात तो यह है कि यही मसीह हमारे भीतर उपस्थित है। इस पर विचार करें कि अदृश्य परमेश्वर का रूप, सृष्टि का सृजनहार, कलीसिया का सिर, संसार का उद्धारकर्ता आपमें अन्तर्वास करता है। परमेश्वर हमें अन्तर्वासी मसीह के बारे में संकरी मानसिकता से बचाए। उसने आपके जीवन को अपना घर बना लिया है। इसी कारण मसीही जीवन एक सामर्थी जीवन है। यीशु के अन्तर्वास का क्या प्रभाव होता है? हम में उसके अन्तर्वास का अर्थ क्या है? मसीही जीवन एक सामर्थी जीवन है। दूसरा, मसीही जीवन परिवर्तित जीवन है।

पद 26, 27 में पौलुस भेद की बात करता है जिसे वह उद्धार के इतिहास में आज तक प्रकट करने के लिए प्रतीक्षा कर रहा था। कुलुस्सियों 1:27 में व्यक्त परमेश्वर का चित्रण पुराने नियम से सर्वथा भिन्न है। आप मेरे साथ अन्तर्वासी मसीह के भेद पर विचार करें। संपूर्ण पुराने नियम में हम देखते हैं कि परमेश्वर अपने लोगों पर दया एवं प्रेम अर्थात अपना अनुग्रह प्रकट करता है। वहां एक तथ्य बार–बार उभरता है –

परमेश्वर आपके साथ है। उत्पत्ति अध्याय 12, 15 – अब्राहम मैं तेरे साथ हूं। उत्पत्ति 26– इसहाक मैं तेरे साथ हूं। उत्पत्ति 28– याकूब मैं तेरे साथ हूं। उत्पत्ति 39– चार अलग–अलग परिस्थितियों में परमेश्वर युसूफ के साथ था। निर्गमन की पुस्तक में मूसा कहता है, मैं फिरौन के समक्ष केसे जाऊंगा? परमेश्वर ने कहा, मैं तेरे साथ रहूंगा, मूसा। यहोशू से उसने कहा, जैसा मैं मूसा के साथ था वैसा ही मैं तेरे साथ भी रहूंगा। मैं तुझे नहीं छोडूंगा और न ही त्यागूंगा। यहोशू 1:1–9 में दो बार परमश्वर ने कहा, मैं तेरे साथ होऊंगा। वह गिदोन से भी कहता है मिद्यानियों से युद्ध कर मैं तेरे साथ हूं। दाऊद, मैं तेरे साथ हूं। सुलैमान, मैं जैसे दाऊद के साथ था, तेरे साथ भी बना रहूंगा। अपने भविष्यद्वक्ताओं से उसने कहा, मत डर। क्यों? क्योंकि मैं तेरे साथ हूं यह पुराने नियम की सच्चाई है। परमेश्वर अपनी प्रजा के मध्य वास करता था। वह मण्डप में, मन्दिर में उनके मध्य वास करता था। नये नियम में यीशु का नाम इम्मानुएल रखने को कहा गया था। क्यों? क्योंकि इम्मानुएल का अर्थ है, परमेश्वर हमारे साथ। यह मसीह का चित्रण है परन्तु यूहन्ना 13:33 में वह कहता है, "मैं और थोड़ी देर तुम्हारे पास हूं: फिर तुम मुझे ढूंढ़ोगे..." ऐसे में तो लाल झंडी दिखाई देने लगती है। "परमेश्वर हमारे साथ" अब हमें छोड़कर जानेवाला है। अब पुराने नियम का "परमेश्वर हमारे साथ" कुलुस्सियों में एक रहस्य बन जाता है जो पवित्र जनों पर अर्थात आप पर प्रकट किया गया और वही मसीह तुम में वास करता है। परमेश्वर की चुनी हुई प्रजा, यहूदियों के लिए वह "परमेश्वर हमारे साथ है।" अतः परमेश्वर हमारे साथ है मसीह–अदृश्य परमेश्वर का स्वरूप, सृष्टि का सृजनहार, कलीसिया का सिर और जगत का उद्धारकर्ता। वह अन्यजाति विश्वासियों में अन्तर्वास करेगा। यह एक ऐसा महान सत्य है जिसके बारे में मैं पूरी तरह आश्वस्त हूं परन्तु हम में से अधिकांश विश्वासी उससे अलग जीवन जी रहे हैं। इसमें सन्देह नहीं कि मसीह हमारे पापों के लिए मरा जो हमारा विश्वास है परन्तु वह इसलिए भी मर कर और फिर जी उठा कि हम में वास करे। अतः वह हमारा उद्धारकर्ता ही नहीं हमारा जीवन है। यही हमारे मसीही शहीदों का विश्वास था। इंटर यूनिवर्सिटी ख्रिस्तीयन फेलोशिप के अगुआ, आएन थॉमस लंदन की झुग्गी झोपड़ियों मे सेवा करते थे। वे सात वर्ष से विश्वास में जी रहे थे, उन्होंने कहा, "मैं आत्मिक रूप से खाली हो चुका था और मैं ने सोचा कि अब जीने का कोई अर्थ नहीं।" इसी प्रकार आज, मेरी समझ में अनेक विश्वासी जन सब कुछ करके थक गए हैं। आगे वह कहते हैं, "एक दिन नवम्बर माह की मध्य रात्री में घुटनों पर गिरकर पूर्ण निराशा में रोने लगा। मैं ने कहा, 'हे परमेश्वर, मैं जानता हूं कि मुझे उद्धार मिल गया है। मैं मसीह यीशु से प्रेम करता हूं। मुझे पूरा विश्वास है कि मेरा मन परिवर्तन हो चुका है। मैं ने पूरे मन से तेरी सेवा करना चाहा है। मैं ने अधिक परिश्रम किया है परन्तु मेरी सफलता असाध्य है।'" उन्होंने कहा कि उस रात कुछ असामान्य घटा। "मैं ईमानदारी से कहता हूं कि उस रात जो सन्देश मुझे मिला वह मैं ने मनुष्यों के मुंह से नहीं सुना था। उस रात परमेश्वर ने मुझ पर बाइबल का प्रकाशन प्रकट किया और वह था, 'मसीह हमारा जीवन।' उस रात मेरे आंसुओं के द्वारा मेरे मन के

अर्तनान्द में परमेश्वर ने मुझ से सपष्ट कहा, "सात वर्षों से जिस जीवन को तेरे द्वारा जीने की मैं प्रतीक्षा कर रहा था वह तू स्वयं ही जी रहा था।" मैं आशा करता हूं कि आप अन्तर देख रहे हैं। उन्होंने लिखा, "सुबह मैं एक नया जीवन लेकर जागा।" जार्ज मूलर का कथन है, "एक दिन ऐसा आया जब मैं मर गया। जार्ज मूलर के लिए मर गया– उसकी इच्छा, उसकी पसन्द, उसकी चयन, उसकी मनोकामना के प्रति मर गया। संसार के लिए मर गया अर्थात – उसकी प्रशंसा, उसकी निन्दा के लिए। अपने भाइयों और मित्रों की सराहना और दोषारोपण के लिए मर गया। उस दिन से मैं ने यही प्रयास किया कि परमेश्वर को ग्रहणयोग्य ठहरुं।" चीन के मिशनरी हडसन टेलर की जीवनी का शीर्षक है, "हडसन टेलर्स स्पिरीचूएल सीक्रेट"–, "हडसन टेलर का आत्मिक रहस्य"– उसके जीवन और सेवा का रहस्य वह समय था जब उसे बोध हुआ कि उसका पूरा जीवन मसीह के अथाह धन को पाने के लिए है। मसीह उसमें अन्तर्वासी था। उसने अपने पत्रों में लिखा, "मेरा हर एक कार्य मेरी इच्छा से नहीं था। वह मुझ में अन्तर्वासी मसीह था जो अपना जीवन जी रहा था।" यही कहलाता है, आपमें अन्तर्वासी मसीह! यीशु आपके लिए मरा क्योंकि वह पुनर्जीवित होकर आपमें जीना चाहता है। ऐसा सच्चा आत्मिक परिवर्तन मन में होता है और कुलुस्सियों 1:27 में यही लिखा है। मैं चाहता हूं कि आप सोचें: मसीह हमारे मन को कैसे प्रभावित करता है? मसीह हमारी भावनाओं को कैसे प्रभावित करता है? हमारी भावानाओं पर हमारे मन का नियन्त्रण है। फिर हमारा मन और हमारी भावनाएं हमारी देह को प्रभावित करती हैं, उसके बाद आती है हमारी इच्छा – हम क्या करते हैं, क्या करने का चुनाव करते हैं। इस पर हमारा विश्वास निर्भर करता है। यह एक मूल सच्चाई है। हमारा जीवन हमारे विश्वास को प्रकट करता है। हमारी इच्छा हमारे संबन्धों को प्रभावित करती है और अन्त में ये सब बातें मिलकर हमारे जीवन के उद्देश्य पर प्रभाव डालती हैं। अतः निष्कर्ष यह निकलता है कि हमारा मन, हमारी भावनाएं, हमारी देह, हमारी इच्छा, मनुष्यों के साथ हमारे संबन्ध और हमारे जीवन का उद्देश्य हमारे मसीह विश्वास का चित्रण है। हम अपनी शक्ति को कहां केन्द्रित करते हैं? हम अपने संबन्धों पर अधिक ध्यान देते हैं– मैं कैसे एक अच्छा पति या पत्नी बनूं? हम कैसे अच्छे माता–पिता बनें? मैं कैसे अच्छे मित्र बनाऊं? हम यह भी जानते हैं कि हमें विश्वासी होने के कारण क्या करना चाहिए– हमें मनन का समय निकालना है, हमें वचन पढ़ना है, प्रार्थना करना है। अतः हम सोचने पर बाध्य होते हैं कि हम अपनी गतिविधियों में इन्हें केसे समायोजित करें। मैं कैसे इसे अपनी दिनचर्या का अभ्यास बनाऊं? हम जानते हैं कि हमें पवित्र रहना है। मैं कैसे पवित्र बनूं? हमारे जीवन में तो पाप है। अब मैं पाप पर विजय पाने के लिए क्या करुं? मैं इस सांसारिक जीवन में मसीह का स्वभाव केसे अपनाऊं? अतः हम अपने जीवन की गतिविधियों को बाइबल के अनुसार व्यवस्थित करने में अपनी पूरी शक्ति लगा देते हैं कि मसीही जीवन जीएं। हम आराधना में जाते हैं। बाइबल अध्ययन कक्षाओं में जाते हैं और कुछ व्यवहारिक बातें सीखते हैं परन्तु सत्य तो यह है कि ये बातें कुछ समय बाद लोप हो जाती हैं। इसका परिणाम यह होता है कि हम निराश हो जाते हैं। इसका कारण

है, मसीही जीवन जीना हमारे लिए असंभव नहीं है इसलिए मसीह को हम में जीवन जीना है क्योंकि सिद्ध मसीही जीवन एकमात्र वही जी सकता है। वही आपको योग्यता प्रदान कर सकता है। सुनिए आएन थॉमस क्या कहता है, "सावधान! मसीही विश्वासी होकर भी आप शैतान के जाल में फंस सकते हैं। आपने परमेश्वर की खोज की है और मसीह को अपना उद्धारकर्ता ग्रहण किया है परन्तु आप ईश्वरभक्ति के भेद में प्रवेश न करें और उसे अपने भीतर वास करने नहीं दें... आप बाहरी नियमों और निर्देशों और आपके द्वारा चुने गए सामाजिक वर्ग के द्वारा निर्देशित सदाचारों के आधार पर मसीही जीवन व्यतीत करते हैं। इस प्रकार अन्यजाति की नाई देहिक कर्मों के धर्म के अभ्यास को अपनाते हैं और मसीह की अपेक्षा धर्म के मूर्तिपूजक बन जाते हैं।" हम मसीही धर्म को मसीह का स्थान दे देते हैं– यह मूर्तिपूजा है। अतः मेरी राय मानें तो आप मसीह धर्म जीने का प्रयास करना छोड़ दें और एक महान सत्य को अपना लें, मसीह को जो परमेश्वर का स्वरूप, सृष्टि का कर्ता, कलीसिया का सिर, संसार का उद्धारकर्ता है और जिसके पास अनन्त धन है।" हम मसीह को अन्तर्वास करने दें और मसीही जीवन का अपना प्रयास त्याग कर मसीह को आपके द्वारा अपनी ज्योति प्रवाहित करने दें।

यीशु आपमें सुधार लाने की इच्छा नहीं रखता है। वह आप में अमूल्य परिवर्तन लाने की इच्छा रखता है। धर्म निर्वाह के लिए नियम एवं विधियों का पालन करना बैरी का परामर्श है। यीशु हमें नैतिक विधियां सिखाने के लिए नहीं मरा। वह हमें अपना जीवन देने के लिए मरा था। आपका मसीही जीवन आप में अन्तर्वासी मसीह का बाहरी जीवन है। हम पवित्रता के लिए विधि–विधान का पालन नहीं करते हैं, मसीह हम में पवित्रता लाता है। वही पवित्र है और आपमें वास करता है। रोमियों 12:2 हमारे जीवन की सच्चाई है कि हम उसकी इच्छा के अनुसार बदले जा चुके हैं। हम उसकी इच्छा को जानते हैं जो मनुष्यों के साथ हमारे संबन्धों को बदल देती है। हमारे संघर्षों का अन्त करती है। अतः अपनी आशा, मसीह को निहारें और उसके धन को प्राप्त करें। वही हम में अमूल्य परिवर्तन लाता है।

अगला चरण हैः मसीह आप में वास करता है– परिवर्तित जीवन, सामर्थी जीवन। हम सब पाप के साथ जन्मे हैं। हम में पाप का स्वभाव है अर्थात अहम् और संसारिकता जो परमेश्वर से दूर रहने का स्वभाव है यह स्वभाव आदम से हम में आया है। अतः हम अच्छे काम और उचित कामों को करने का कैसा भी प्रयास करें हमारे साथ पाप की समस्या सदा उपस्थित रहती है। हम मसीही कार्यकलाप करते हैं, सेवकाई भी करते हैं परन्तु हम जीवन के केन्द्र में मसीह के परिवर्तन से चूक गए हैं। यही कारण है कि मसीह ने कहा, "उस दिन अनेक जन मुझसे कहेंगे, प्रभु, प्रभु क्या हमने तेरे नाम में भविष्यद्वाणी नहीं की? चमत्कार नहीं किए और दुष्टात्माओं को नहीं निकाला? और मैं उनसे कहूंगा, मैं तुम्हें नहीं जानता। हे कुकर्मियों मुझ से दूर हो जाओ।" सावधान! हमारे धार्मिक काम भी पापी स्वभाव में ही होते हैं। यही यीशु के कार्य का सौंदर्य है। उसने क्रूस पर हमारे पापी स्वभाव को ठोंक दिया और हम में अपना डेरा किया। उसने परमेश्वर का

आत्मा हम में स्थापित किया– मसीह का अन्तर्वास। वह हमारे पापों और मृत्यु को स्वयं ले लेता है और हम में अपना जीवन डाल देता है– आत्मिक स्वभाव। पौलुस गलातिया की कलीसिया को यही भेद समझा रहा है– 5:16 "आत्मा के अनुसार चलो तो तुम शरीर की लालसा किसी रीति से पूरी न करोगे। क्योंकि शरीर आत्मा के विरोध में और आत्मा शरीर के विरोध में लालसा करता है, और ये एक दूसरे के विरोधी हैं, इसलिए कि जो तुम करना चाहते हो वह न करने पाओ। और यदि तुम आत्मा के चलाए चलते हो तो व्यवस्था के अधीन न रहे।" और पद 19–21 में वह पाप के कृत्य दर्शाता है। तब पद 22 में आत्मा का फल और पद 24 में वह कहता है कि जो मसीह में है उन्होंने पापी स्वभाव को लालसाओं के साथ क्रूस पर जड़ दिया है।

गलातियों 5:19–25 "शरीर के काम तो प्रगट हैं, अर्थात् व्यभिचार, गन्दे काम, लुचपन, मूर्तिपूजा, टोना, बैर, झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध, विरोध, फूट, विधर्म, डाह, मतवालापन, लीलाक्रीड़ा और इनके जैसे और–और काम हैं, इनके विषय में मैं तुम से पहले से कह देता हूँ जैसा पहले कह भी चुका हूँ, कि ऐसे ऐसे काम करनेवाले परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे। पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, शान्ति, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, और संयम हैं; ऐसे ऐसे कामों के विरोध में कोई भी व्यवस्था नहीं। और जो मसीह यीशु के हैं, उन्होंने शरीर को उसकी लालसाओं और अभिलाषाओं समेत क्रूस पर चढ़ा दिया है। यदि हम आत्मा के द्वारा जीवित हैं, तो आत्मा के अनुसार चलें भी।"

यह शुभ संदेश है। मेरे मित्रों, यहां हमारे लिए एक संदेश है। आप मसीह में विश्वास करते हैं तो आपका पापी स्वभाव क्रूस पर जड़ दिया गया है। वह शक्तिहीन हो गया है। आप अब उसके दासत्व में नहीं हैं। क्यों? क्योंकि मसीह जो पाप से मुक्त है आपमें वास करता है। हमें पाप और लालसाओं से संघर्ष करके उन पर जय पाने की आवश्यकता नहीं है। यह काम तो मसीह कर चुका है। मसीह ने अपना जीवन हमारे साथ बदल लिया है। गलातियों 2:20 में पौलुस कहता है, "मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूं, अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ मैं जीवित है।" अब प्रश्न यह है कि मसीह ने अपना जीवन मेरे साथ क्यों बदला? उसने हमारे द्वारा अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए ऐसा किया कि उसकी महिमा हमारे द्वारा प्रकट हो। हम संसार मे मसीह का स्वभाव दर्शाते हैं। देखिए पौलुस कुलुस्सियों को क्या लिखता है– 1:24, "मैं उन दुखों के कारण आनन्द करता हूं, जो तुम्हारे लिए उठाता हूं और मसीह के क्लेशों की घटी उसकी देह के लिए, अर्थात कलीसिया के लिए, अपने शरीर में पूरी करता हूं।" इस पर ध्यान दें। पौलुस मसीह के क्लेशों की घटी कलीसिया के लिए पूरी करता है। वह क्या कहना चाहता है? क्या मसीह के कष्ट कम थे? नहीं वह तो मरने तक कष्ट उठा रहा था कि आपमें और मुझ में पुनर्जीवित हो जाए। पौलुस यह पत्र बन्दीगृह से लिख रहा था। वह स्पेन जाकर सुसमाचार सुनाना चाहता था कि मसीह ने उनके पापों का दण्ड चुका दिया है और उन्हें यह मेरे जीवन में देखना है। वह सुसमाचार के लिए कष्ट उठाएगा तो संसार

उसमें क्रूसित मसीह की छवि देखेगा। मसीह संसार में अपने प्रेम और बलिदान को कैसे प्रकट करता है? अपने लोगों के आत्मत्याग के प्रेम द्वारा! रोमानिया के एक पास्टर ने अनेक कष्ट उठाए और कहा, "मसीह का क्रूस हमें परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी ठहराने के लिए था परन्तु हमारा क्रूस सुसमाचार प्रचार के लिए है। दूसरे शब्दों में हमें क्रूस उठाना है कि संसार उस मुक्तिदाता को जाने जो मर गया कि उन्हें उसके प्रेम की अनुभूति हो। संसार में असंख्य मनुष्यों ने सुसमाचार नहीं सुना है और वे अगम ही नहीं ऐसी परिस्थितियों में हैं जहां सुसमाचार स्वीकार्य नहीं है। अतः हमें यह प्रश्न पूछना है, "क्या हम मसीह के क्रूस को गले लगाएंगे जिससे कि वे क्रूस के मसीह के आनन्द में आ जाएं? ऐसे कठिन स्थानों में से एक है मध्य पूर्व जहां सुसमाचार स्वीकार्य नहीं। वहां के विश्वासी अपने जीवन को दांव पर लगा कर अपने में विद्यमान मसीह का प्रेम, दया और अनुग्रह प्रसारित कर रहे हैं। हमारे जीवन का बलिदान ही क्रूस पर लटके मसीह के प्रेम को उन पर प्रकट कर सकता है और इस प्रकार वे महिमा की आशा अर्थात उनमें अन्तर्वासी मसीह को समझ पाएंगे। यीशु ने अपना जीवन हमारे साथ बदल दिया कि हमारे द्वारा अपने उद्देश्य की पूर्ति करे। यह विचार हमें आशा की ओर ले चलता है।

मसीही जीवन सामर्थी, परिवर्तित एवं मसीह से बदला हुआ जीवन है। यह सुरक्षित जीवन है अर्थात् आशा से पूर्ण है। यह एक निश्चितता है। यह न तो स्वप्न है, न मनोकामना और न ही संभावना है। वर्षों पूर्व मैं किसी सभा का प्रचार सी.डी. पर सुन रहा था। कोई प्रचारक इसी संदर्भ में प्रचार कर रहा था। उसने एक उदाहरण दिया जिसकी मैं ने कल्पना करने का प्रयास किया। अतः मेरे साथ कल्पना करें कि एक खाली पात्र है। वह हम हैं। जब हमारा जन्म हुआ तब हम खाली थे, इस पात्र की नाई अर्थात हमारे पापी स्वभाव में पवित्र आत्मा नहीं था। अब जब हमने मसीह में विश्वास किया कि वह हमें पापों से उबार ले तब मसीह इस खाली पात्र में रहने आ गया और इफिसियों 13, 14 के अनुसार उसने आप पर पवित्र आत्मा की मुहर लगा दी– आपके उद्धार की गारन्टी! यह एक दृढ़ मुहर है। मसीह कभी भी आपको नहीं छोड़ेगा या त्यागेगा। अब इसके सौंदर्य को निहारें– कुलुस्सियों 1:28, "जिसका प्रचार करके हम हर एक मनुष्य को चेतावनी देते हैं और सारे ज्ञान से हर एक मनुष्य को सिखाते हैं, कि हम हर एक व्यक्ति को मसीह में सिद्ध करके उपस्थित करें।" यह पौलुस द्वारा मसीह के साथ हमारे संबन्धों का चित्रण है– यहां हम मसीह में हैं। कुलुस्सियों 3:3 और भी अधिक स्पष्ट विवरण देता है, "क्योंकि तुम तो मर गए और तुम्हारा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है।" क्योंकि मसीह परमेश्वर में है। अतः सुस्पष्ट दृश्य यह है कि मसीह हम में है और हम मसीह में हैं और मसीह परमेश्वर में है। इसका अर्थ यह हुआ कि शैतान को आपके पास आने के लिए परमेश्वर का सामना करना पड़ेगा। यदि वह परमेश्वर से बचकर निकल भी आता है, जो संभव नहीं, तो उसे मसीह का सामना करना पड़ेगा परन्तु वह तो पहले ही मसीह से हार चुका है। अतः आप सुरक्षित हैं। आपको इस संसार में कोई हानि नहीं हो सकती क्योंकि आप परमेश्वर के अनुग्रह, दया, प्रेम,

सामर्थ्य और प्रभुता में सुरक्षित हैं। यह शुभ सन्देश है। यही मसीही जीवन है। महिमा की आशा, मसीह आपमें अन्तर्वासी है।

परिपूर्ण जीवनः यह मसीही जीवन का अन्तिम चरण है। मसीही जीवन सामर्थी है, परिवर्तित है, मसीह के साथ बदला हुआ है, सुरक्षित है और परिपूर्ण है। कुलुस्सियों 1:28 फिर से देखें, "मसीह में सिद्ध करके प्रस्तुत करें।" मसीह में सिद्धता! अध्याय 3 पद 4 में हमारी आशा व्यक्त है, "जब मसीह जो हमारा जीवन है, प्रगट होगा, तब तुम भी उसके साथ महिमा सहित प्रगट किए जाओगे।" इसी को पौलुस फिलिप्पयों 3:20, 21 में इस प्रकार कहता है, "वह अपनी शक्ति के उस प्रभाव के अनुसार जिसके द्वारा वह सब वस्तुओं को अपने वश में कर सकता है, हमारी दीन–हीन देह का रूप बदलकर, अपनी महिमा की देह के अनुकूल बना देगा।" इसी सत्य को यूहन्ना अपनी पहली पत्री 3:2 में व्यक्त करके कहता है, "जब वह प्रगट होगा तो हम उसके समान होंगे।" मसीह जीवन का अन्तिम लक्ष्य यही है कि हम उसके समान होंगे, तब कोई संघर्ष न होगा, न दुःख होगा, न पीड़ी होगी। हम उसमें सिद्ध हो जाएंगे। अतः पौलुस रोमियों 8:28 में कहता है,

रोमियों 8:28–30 "हम जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं; अर्थात् उन्हीं के लिये जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं। क्योंकि जिन्हें उसने पहले से जान लिया है उन्हें पहले से ठहराया भी है कि उसके पुत्र के स्वरूप में हो, ताकि वह बहुत भाइयों में पहिलौठा ठहरे। फिर जिन्हें उसने पहले से ठहराया, उन्हें बुलाया भी; और जिन्हें बुलाया, उन्हें धर्मी भी ठहराया है; और जिन्हें धर्मी ठहराया, उन्हें महिमा भी दी है।"

मेरे भाइयों और बहनों एक दिन हम मसीह में सिद्ध होकर परमेश्वर के सामने खड़े होंगे। मसीह आपमें मसीही जीवन की सिद्धता है। मसीह आपमें महिमा की आशा है। उसने हमें सामर्थी जीवन दिया है। उसने हमें पूणरूप से बदल दिया है। 2 कुरिन्थियों 3:8 में लिखा है कि वह हमें महिमा से महिमा अर्थात् बढ़ती हुई महिमा में बदल रहा है। अर्थात् अधिकाधिक मसीह के रूप में बदल रहा है। आपके अन्तरतम् भाग में पवित्र आत्मा बसा हुआ है और एक दिन वह आपको मसीह के रूप में बदल देगा। आप उसमें पूरी तरह सुरक्षित हैं। इस सत्य के लिए परमेश्वर की स्तुति करो! आपमें अन्तर्वासी मसीह महिमा की आशा है।

आइए हम अपने सिरों को झुकाएं। मैं आपसे दो प्रश्न पूछता हूं। पहला प्रश्नः क्या मसीह आपमें अन्तर्वासी है? मैं यह नहीं पूछ रहीं हूं कि आपने बपतिस्मा लिया है या आप किसी कलीसिया के सदस्य हैं या आजीवन आराधना में उपस्थित हुए हैं या कलीसिया के अगुवे हैं। क्या आपने उसमें विश्वास किया है कि आपको पापों से उबार कर आप में वास करे? यदि आपने ऐसा नहीं किया है तो आप अभी उससे कहें, "मैं चाहता हूं कि तू मुझ में वास करे। मेरे पापी स्वभाव को अपने धर्मी स्वभाव से बदल ले। मुझे विश्वास है कि तू ही ऐसा कर सकता है क्योंकि मैं तो असमर्थ और असहाय हूं। तू ही अनुग्रह दाता है और पाप क्षमा देता

है। मैं विश्वास रखता हूं कि ज्यों ही आप उससे यह कहेंगे त्यों ही वह आपमें वास करने आ जाएगा। क्या मसीह आपमें वास करता है?"

दूसरा प्रशनः वे जो विश्वास से कहते हैं, "मसीह मुझ में है।" उनसे मैं पूछता हूं, "क्या मसीह आपका जीवन है?" क्या वह आपको बदल रहा है या आप अपने प्रयास में लगे हुए हैं? क्या आप उससे कहेंगे, "मेरे लिए यह काम असंभव है इसलिए मैं हार गया और तुझे समर्पण करता हूं।" मैं चाहता हूं तू मेरा मसीही जीवन हो जाए। मसीह मुझ में महिमा की आशा है।

हम प्रार्थना करें और जो इन प्रश्नों के उत्तर देना चाहते हैं वे घुटने टेंके और कहें, "मसीह मैं आज अपने लिए मर जाना चाहता हूं और चाहता हूं कि तू मुझ में जीवन जीए।"

हे पिता, मैं प्रार्थना करता हूं कि तू ऐसे मनुष्यों को उभार जो परिवर्तित, यीशु से बदले, सामर्थी, सुरक्षित और सिद्ध मसीही जीवन का अनुभव कर रहे हैं। हे पिता, हमें प्रथागत धर्म से मुक्ति दिला क्योंकि वह हमें अन्तर्वासी मसीह की आशा के आनन्द से वंचित करते हैं। हे पिता, मैं प्रार्थना करता हूं कि मनुष्य आज तुझ में विश्वास ले आएं। आज पहली बार तू अपने आत्मा द्वारा उनके जीवन के केन्द्र में आमूल परिवर्तन ले आ। हम प्रार्थना करते हैं कि तू हमें ऐसे मनुष्य बना जो संसार को दिखाएं कि अन्तर्वासी मसीह महिमा की आशा का अर्थ क्या है। यीशु के नाम में आमीन!

उत्सव दीपिका

डॉ. डेविड प्लॉट

शिष्य की पहचान (भाग–2) मसीह तुम में अन्तर्वासी

कुलुस्सियों 1:24–29

मसीह जीवन...

मसीह

जीवन है _____

– वह परमेश्वर का _____ है

– वह सृष्टि का _____ है

– वह कलीसिया का _____ है

– वह संसार का _____ है

तुम में

जीवन _____

यीशु अपना जीवन हमारे साथ _____ है।

– अपना उददे्श्य हमारे _____ करने के लिए।

– मसीह ने उद्धार को पूरा करने के लिए कष्ट उठाया; हम कष्ट उठाते हैं कि उद्धार _____ करें।

– क्या हम मसीह के क्रूस को गले लगाएं कि वे क्रूस के मसीह को _____ ?

अन्तर्वासी

जीवन _____

यीशु _____ मर गया कि तुम में _____ करे।

– सच्चा आत्मिक परिवर्तन से _____ होता है।

– यीशु आपको _____ की इच्छा नहीं रखता है; वह आपको बदल देना चाहता है।

– मसीही जीवन _____ मसीह का बाहरी जीवन है।

आशा

जीवन _____

– मसीह _____ में है।

– आप _____ में है।

– मसीह _____ में है।

महिमा

जीवन _____

मसीह आपमें _____ अर्थात् मसीह आपमें _____